वसंत वैली पत्रिका

पुस्तक से परे हिन्दी

सिनेमा से हिन्दी का प्रचार

"हिन्दी हमारी राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है तथा सिनेमा इसका सरलतम माध्यम। जय हिन्दी!"

–सुमित्रानंदन पंत

हिन्दी सिनेमा की हिन्दी भाषा के प्रचार में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। हिन्दी हमारी राजभाषा है लेकिन सही रूप से प्रचार न हो पाने के कारण इसका विकास नहीं हो पा रहा है। हिन्दी सिनेमा ने जिस विस्मयजनक तरीक़े से हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाया है वह अति प्रशंसनीय है।

विश्व में आज सबसे ज़्यादा निर्माण हिन्दी फ़िल्मों का होता है, जिस वजह से हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार न सिर्फ़ भारत के शहरों, कस्बों, गांवों में हो रहा है बल्कि विश्व के अनेक देशों में भाषा का प्रचलन बढ़ रहा है| हिंदी फ़िल्में भाषा व उसके अस्तित्व संबंधी कथाएँ, भजन, गीत तथा जीवनी का ज़िम्मेदारी से सही स्वरूप मनोरंजक तरीक़े से प्रस्तुत करती हैं। आज जब हिन्दी भाषा का ज्ञान व महत्व लुप्त होता दिख रहा है, हिंदी सिनेमा बड़े-छोटे, अनपढ़-शिक्षित, राजा-रंक सभी के लिए हिन्दी को ख़ुशी से स्वीकार करने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। हिंदी सिनेमा ने राष्ट्रभाषा को उसके सही मुक़ाम पर पहुँचाने में किसी भी अन्य माध्यम की तुलना में अहं भूमिका निभाई है।

-विवस्वत रस्तोगी, ९

SCHOOL WATCH

Inter-Section English Debate

Class 6
Best Speaker- Veda Kalra
Best Interjector- Kyrene Solanki
Class 7
Best Speaker- Amaeera Kher
Best Interjector-Meera Shukla
Class 8
Best Speaker- Sahima Mittal
Best Interjector- Aarush Kapur
Class 9
Best Speaker- Jia Noor Singh Bhandal
Best Interjector- Shreyasi Jindal
Class 10
Best Speaker - Shyla Upadhyay
Best Interjector- Chaya Paumier
Class 11
Best Speaker- Ayushmaan Ashish Kher
Best Interjector- Anshuman Singh
Class 12
Best Speaker- Siddhant Gandhi
Best Interjector- Kushagra Goenka

Modern High School for Girls,Maitree Event
Endnote- 1st Prize- Laila Alva, Sabeer Bhullar, Prithvi Oak, Aadi Jain and Zaayra Singh
Guess Who- 2nd Prize- Udhay Aman Chopra, Advaita Sehgal and Mehek Anand
Hometeam- 3rd Prize- Naaz Gill, Raisah Ila Panda, Ieshaan Mohan Puri and Prithvi Mehta
Micdrop- 1st Prize- Jai Kapoor
Repertoire- 2nd Prize- Sanaa Sharma, Reana Soni, Gauri Minocha and Prakriti Mahajan
Revampit- 1st Prize- Shyla Upadhyay and Myra Prasad

पत्रकारिता

'हिंदी हैं हम वतन हैं हिंदुस्तान हमारा'

हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पत्रकारिता की भूमिका अहं है| हिंदी के अस्तित्व को बचनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान है।

राष्ट्र स्तर पर हिंदी एक प्रचलित भाषा होते हुए भी बहुत तेज़ी से राज्यों, शहरों, ऑफिस, विद्यालयों में लुप्त होती जा रही है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में समाचार के माध्यम से घर-घर में पहुँच रही है| सही कहा है जहाँ न पहुँचे सरकार, वहाँ पहुँचे पत्रकार। टेलीविज़न, रेडियो, पत्रिका आदि पत्रकारिता के वो माध्यम हैं जो हिंदी को लिखने- पढ़ने में असमर्थ लोगों को भी भाषा का सम्पूर्ण आनंद दिलाते हैं। समाचार पत्र, टेलीविज़न, रेडियो, पत्रिका हमें हिंदी के विभिन्न रूप- भजन, समाचार, वाद-विवाद, वार्तालाप, शास्त्रों का ज्ञान आदि से अवगत कराते हैं।

अतः हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने व संभालकर रखने में पत्रकारिता के अद्भुत योगदान को शत-शत प्रणाम।

-शाश्वत रस्तोगी, ९

हिंदी विज्ञापन का बढ़ता जोश

"दाग़ अच्छे है","कुछ मीठा हो जाये!" सर्फ़ व कैडबरी के विज्ञापनों की ये पंक्तियाँ हमारे हृदय में छप गईं हैं। विज्ञापन ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए भारतीय स्थानीय बोली हिंदी का प्रयोग करते हैं, जिसे कई लोग 'एक तीर से दो निशाने' वाली बात मानते हैं। एक तरफ़ इनके माध्यम से लोग युवा पीढ़ी में हिंदी भाषा का प्रचार बढ़ा रहे हैं, और दूसरी तरफ़ वे इनका प्रयोग करके अपने व्यापार के धन राशि में भी बढ़ौती होती हैं। ऐमज़ॉन व गूगल जैसे विशाल उद्योगों ने भी अब हिंदी विज्ञापन बनाना शुरू कर दिया है। अनुसंधान और आँकड़े इंगित करते हैं कि दुनिया के जनसांख्यिकी में हिंदी भाषा का बहुमत प्रयोग है, और संभव है कि यही कारण है कि बहुराष्ट्रीय व्यवसाय अब हिंदी विज्ञापन बनाने लग गए हैं ताकि वे इस रुझान को अपना कर अधिकतम मुनाफ़ा कर पाएँ।

-दक्शायानी चंद्रा, १०

"हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है. उसे हम सबको अपनाना है।"

– लालबहादुर शास्त्री

हिंदी दिवस

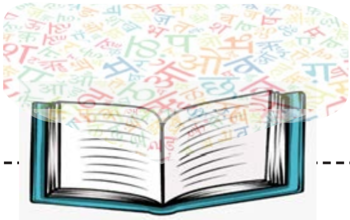

हिंदी दिवस मनाएँ क्यों?

हर साल हम अपने देश की एक खूबसूरत भाषा को याद करते हैं, पर क्या हम इसी रुचि से भाषा को सिर्फ़ इस एक दिन याद कर सक्ते है? हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसने पूरी दुनिया में स्वतः ही प्रसारित होती गई | भारतीयों की जिंदगी का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है जिसे हमें खुले हाथों लेना चाहिए। हमें अंग्रेज़ी सीखना जरूरी है, मगर इसका यह मतलब नहीं है कि हम एक ऐसी भाषा को भूल जाएँ जिसकी सुंदरता से ऐसे चमत्कार उत्पन्न होते हैं जिन्हें किसी दूसरी भाषा में नहीं देखा जा सकता। कहने को तो हिंदी दिवस को इस भाषा के अपनाए जाने के लिए मनाते हैं मगर हम इस भाषा की मिठास को हर दिन स्वाद लेते हैं चाहे हो गीत संगीत यो फिल्म |आधुनिकता के दौर में धीरे-धीरे इस भाषा का प्रचलन अब कम होता जा रहा है, जबकि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे सीखने के लिए कभी लोग देश-विदेश से भारत आया करते थे, मगर अब हम भारतीय नागरिकों में ही इस भाषा को ज़िंदा रखने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। यह भाषा हमारे देश के लिए इतनी महत्तपूर्ण है, तथा इस देश की प्रगति में सहचरी बनकर चल रही है | अतः हमें हिन्दी दिवस या पखवाड़ा मनाने की जरूरत नहीं है क्योंकि हिन्दी हमारे देश का एक अभिन्न अंग है| *–अनिरुद्ध वत्स, 9*

MICROFICTION

कक्षा 6- मेरी बोली

कभी म्यूट! कभी इंटर्नेट मुसीबत! हर दिन यही सुनते रहते है हम। मेरी बोली तो मुझको भी नहीं पहचान आती। -वेदा कालरा

कक्षा 7- उलटी गंगा बहाना

किसने बोला कि बहुत चीज़े असंभव थी? हमें आसमान तक पहुँचने की कोशिश करनी पड़ेगी और अगर हम सफल नहीं हुए, तो हम बादल पर गिरेंगे। -उदय रेलन

कक्षा 8- किताबें झांकती हैं बंद अलमारी के शीशे से ताबें हम बच्चों को ही नहीं बल्कि सभी मनुष्यों को ज्ञान देती है और ज्ञान सब जगह होता है चाहे वह अलमारी के पीछे हो या किसी के हाथ में। -प्रणव जैन

कक्षा 9- जो गरजते हैं बरसते नहीं
क्या यह पत्थर दिल समझ पाएगा,
क्या वह इस राह पर ही चले जायेगा,
मेरे भावों, सोचों और विचारों के इस दरिये को,
इन्हें इंसाफ तू दिला पायेगा,
मन की इस कसौटी में तू,
आवाज़ कर भी; या मौन रह जायेगा। -दर्श पूरी

कक्षा 10 - एक हाथ से ताली नहीं बजती
बिना पानी के फ़सल नहीं उगती,
चोंच के बिना चिड़िया दाना नहीं चुगती,
धोखा देने वालों से दोस्ती नहीं सजती।
एक हाथ से ताली नहीं बजती। -सार्थक खोसला

कक्षा 11- दिल तो सच्चा है

दिल कुछ चाहता है, लेकिन कुछ और है करता मन। दिल से काम करने वाले से वे हुए प्रसन्न। दिल थरथराता है, लेकिन दिल तो सच्चा है। -प्रनिती जैन

कक्षा 12 - जिसकी लाठी उसकी भैंस

गोद्रा के खून से अयोध्या के मंदिर में लाल सजाया है; क्या अब भी यकीन नहीं कि जिसकी लाठी उसकी भैंस? - तनमय सिंह

शब्द खोज

च	न्	द्र	का	न्	ता	द्र	प्	र्	द्र	कि	त्
कि	क	व	ए	र॰	त	ट	य	ऊ	उ	ल	या
क	र	प्	ला	कि	या	कि	दं	या	इ	प	ग
व	श्	श्	दं	द्र	नि	ला	श्	मा	ई	ओ	प
ए	मि	या	र्	या	र्	द्र	शो	र्	पी	इ	त्
र	थी	शो	श्	क्ष	म	श्	ट	प्	चि	उ	र
त	प्	ला	ट	प्	ला	चि	या	क्ष	दं	य	द्र
य	र्	चि	कि	दं	धु	प्	कि	ला	ब	त	प्
उ	द्र	ट	दं	व	रा	क	दं	श्	रा	र	र्
का	मा	य	नी	द्र	ट	व	चि	कि	स	ए	या
इ	श्	या	धु	रा	दं	ए	शो	प्	द	व	दं
ओ	र्	क्ष	श्	ला	अ	प्	स	रा	फ	क	प्
प	श्	दं	शो	प्	या	र	द्र	या	ग	म	द्र
ल	प्	द्र	या	दं	व	त	प्	र्	ह	न	त
य	शो	ध	रा	द्र	या	म	धु	शा	ला	ब	म
कि	j	ह	फ	द	स	आ	ज	क्ष	क	व	स

1.चन्द्रकान्ता- खत्री
2.निर्मला- प्रेमचंद
3.कामायनी- जयशंकर प्रसाद
4.अप्सरा- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
5.यामा- महादेवी वर्मा
6.चिदंबरा- सुमित्रानंदन पंत
7.यशोधरा- मैथिलीशरण गुप्त
8.रश्मिरथी- रामधारी सिंह 'दिनकर'
9.मधुशाला- हरिवंश राय बच्चन
10.तमस- भीष्म साहनी
11.त्यागपत्र- जैनेन्द्र कुमार

मेरी परछाई

है मेरी एक छोटी परछाईं जो वहीं रहें जहाँ मैं रहूँ,
उसका उपयोग क्या हो सके उससे अधिक मैं जानूँ।
मेरे जैसी ही वो भी है, ऊपर से नीचे तक,
मुझसे पहले कूदे वो जब मैं कूदूँ बिस्तर पर।

सबसे मज़ेदार चीज़ है, उसको बढ़ते देख,
बिलकुल भी वैसे नहीं जैसे बढे सभी अनेक।
कभी हो जाए इतनी लंबी, मानो जैसे हो खली,
और कभी हो जाए इतना छोटी कि दिखे ही नहीं।

बच्चे कैसे खेलें, उसे आता ही नहीं, मेरा मज़ाक़ बनाने का मौक़ा न छोड़े वह कभी।
चिपके रहे वह मुझसे, एक कायर है वो,
शर्म की बात है ये, कि वे छोड़े न मुझको।

एक सुबह सूरज जब न था आया, मैं उठा और हर शाखा पर चमकता ओस था पाया। पर एक सुप्त नींद सिर की तरह, मेरी आलसी परछाई, ने मेरे पीछे घर पर रहकर बिस्तर में नींद थी फ़रमाई। *–साईशा मिश्रा, 8*

चुटकुले- ज़रा मुस्कुराएँ!

१। काढ़ा, विटामिन C, जिंक इत्यादि लगातार लेने के बाद...
पड़ोसी ने पूछा: भाई अब आपके परिवार की इम्युनिटी कितनी बढ़ी..??
जवाब मिला: भैया पहले हम झगड़ते थे तो एक घंटे में साँस फूल जाया करती थी... और अब हम 5-6 घण्टे आराम से झगड़ सकते हैं...

२। टीचर: नालायक पढ ले ! कभी तूने अपनी कोई बुक खोल के देखी भी है?
संजू: हाँ मैं रोज़ खोलता हूँ एक बुक!
टीचर: कौन सी?
संजू: फेसबुक

३। पुलिस अफ़सर (घंटी बजाकर): दरवाज़ा खोलिए प्लीज़!
संता: क्या करना है आपको?
पुलिस अफ़सर: हमें आपसे कुछ बात करनी है
संता: आप कितने लोग हो?
पुलिस अफ़सर: चार
संता: तो फिर आपस में बात कर लीजिए ना!

–सुमाया बेरी, ९

हिन्दी दिवस

हिंदी दिवस: हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं बल्कि भावनाओं और विचारों को उभारती हुई प्रचंड धारा है। हिंदी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। गाँधी जी ने हिंदी भाषा को जनमानस की भाषा भी कहा है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुरोध पर 1953 से पूरे भारत में हर वर्ष 14 सितम्बर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी दुनिया में चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी दिवस के मौके पर स्कूलों, कॉलेजों में कई कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जैसे कि दोहे, कविताएँ और निबंध इत्यादि। इस बार कोरोना काल में इन कार्यक्रमों को ऑनलाइन आयोजित किया जा रहा है। मैं भी हिंदी दिवस को लेकर बहुत उत्साहित हूँ क्योंकि मैं अपनी कक्षा में मुल्ला नसीरूद्दीन नामक किरदार की वेशभूषा पहन कर उनकी कहानी को प्रस्तुत करूंगी।

हिंदी है हमारी मातृभाषा,
हिंदी है हमें बड़ी प्यारी
हिंदी की सुरीली वाणी,
हमें लगे हर पल प्यारी।

अलिशबा रहमान, पाँच-ए

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है - महात्मा गांधी

१४ सितम्बर १९४९, को भारत की संविधान सभा ने एक मत होकर यह निर्णय लिया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी। यह दिन हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। मेरा मानना है कि हिंदी एक ऐसी भाषा जिसे सीखना बहुत ही आसान है। सभी राज्यों के लोग इसे आसानी से सीख सकते हैं। यह हमारी अनेकता में एकता की भावना को पूरा करने के लिए एक बहुत ही सुंदर माध्यम बन सकता है। यह भारत के सभी राज्यों को एक सुंदर माला में पिरोए रखने वाली एक स रल व अनोखी भाषा है। २०११ में हुई जनगणना के अनुसार भारत की १ .२ अरब आबादी में से ४१.०३ फ़ीसदी जनता की मातृभाषा हिंदी है। हिंदी शब्द फ़ारसी शब्द 'हिंद' से जन्मा है। 'नमस्ते' हिंदी का सब से अधिक बोला जाने वाला शब्द है। इस हिंदी दिवस हम भी एक नाट् य प्रस्तुति की तैयारी कर रहे हैं। बड़ा मज़ा आएगा।

आदित्य सग्गू, पाँच-सी

आसमान में हज़ारों तारे

एक आसमान में हज़ारों तारे,
टिम-टिमाते हैं वो सारे,
बादल गुज़रते चाँद ढलता,
नई सुबह में सूरज निकलता।

रियाना टिक्कू, तीन-सी

कभी लगा

कभी लगा मैं घोड़ा बनकर
दूसरे घोड़ों के साथ दौड़ लगाऊँ,
कभी लगा मैं शेर बनकर
सब लोगों को ख़ूब डराऊँ।
कभी लगा मैं बंदर बनकर
दूसरे बंदरों के साथ आम चुराऊँ,
कभी लगा मैं रॉकेट बनकर
तारों पर जाकर घूम आऊँ।
पर जब मेरी आँख खुली
पाया अपने आप को तुषिता ही,
सोचा क्यों न सब बच्चों के साथ मिलकर
श्रीमती तोमर की कक्षा में मौज उड़ाऊँ।

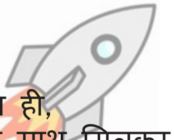

तुषिता जौहर, तीन-सी

सूरज - तुकबंदी कविता

सूरज आया, रौशनी लाया,
धूप के मारे जहाँ चिल्लाया,
तभी सफ़ेद बादल आसमान में छाया,
खेलने के लिए वीर भी निकल आया।
रोज़-रोज़ वह आइसक्रीम पिघलाता,
लेकिन हमें तो बहुत भाता,
सूरज तो है जीवन दाता,
यह न हो तो अंधकार है छाता।

अवनी गर्ग, चार-ए

हिन्दी पर रचनाएँ

हिंदी हमारी शान है

हिंदी हमारी शान है,
यह हमारी पहचान है,
हिंदी हमारा अभिमान है,
इस में सारा ज्ञान है।
हिंदी से हिंदुस्तान है,
देश की यह जान है,
हिंदी का सम्मान करें,
दुनिया भर में नाम करें।
भारत की राष्ट्रभाषा है हिंदी,
हर देश वासी की भाषा हैं हिंदी,
हिंदी बनाती हमें बलवान,
हम करें हिंदी का गुणगान।

अभिनव मंडल, चार-ए

हमारी मातृभाषा है हिंदी ,
बोलने में है मीठी कितनी।
हिंदी है हमारी देश की शान ,
हम रखेंगे हमेशा उसका मान ।
एक नया दौर लहराएँगे,
हिंदी भाषा का विकास हर ओर फैलाएँगे।
अब और नहीं खेलेंगे आँख मिचौली,
सिर उठाकर बोलेंगे हिंदी बोली।
हिंदी सीखने में लगा देंगे जान,
हिंदी ही है हमारी पहचान।

त्रिशान सेठी, चार-सी

हिन्दी, हिन्दी, हिन्दी,
किसने बनायी हिन्दी।
मम्मी के माथे पर बिंदी,
हिन्दी पर भी वैसी ही बिंदी,
हिंदी की यह छोटी बिंदी,
पर मतलब नहीं है इसका चिन्दी,
लगती नहीं है मुझको गंदी,
पर पढ़ने में मुश्किल हिन्दी
मेरा इक माली है नंदी,
पढ़ता लिखता सुंदर हिंदी,
देश भर की भाषा हिंदी,
इसलिए नोरा भी सीखेगी हिंदी।

नौरा छटवाल, चार-ए

Authorscape 2020

Ms. Bhakti Mathur

The children of Class 3 and 4 had an interactive session with Ms. Mathur. She spoke about how she began

writing mythological stories for children. In 2010, Holi was just around the corner and she wanted a book to explain the festival to her children. She couldn't find any books with good content. So she decided to write her own book. That is how the 'Amma Tell Me' series was born. When she was young her grandma and her caretaker would tell her stories from the Ramayana and Mahabharata which influenced her immensely. Since her favourite God is Hanuman she narrated instances from her book, 'Amma tell me how Hanuman crossed the ocean' and 'Amma Tell Me about Durga Puja'. It was fascinating to get to know how Mahisha lost to Durga Ma because he underestimated the power of women. Finally, she ended the session with a piece of advice for the students saying, "Better readers make better writers, hence, one should keep reading books'.

श्रीमती जयंती रंगनाथन

आज हमारी मुलाकात लेखिका जयंती रंगनाथन से हुई। उन्होंने हमें कई दिलचस्प बातें बताईं जैसे हमें बहुत सारी हिन्दी की पुस्तकें पढ़नी चाहिए और अपनी कल्पना का इस्तेमाल करते हुए कहानियाँ भी लिखनी चाहिए। हमें आसान और सरल हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। हमें हिन्दी भाषा से प्यार होना चाहिए। जब हम एक कहानी लिखें तो शुरुआत, मध्य और

समाप्त तो ज़रूरी होता ही है मगर कहानी के पात्र और विषय भी ज़रूरी होते हैं कहानी लिखने पर उसे 2-3 बार पढ़ें और पढ़ाएँ, सोशल मीडिया या पॉडकास्ट (podcast) में डालें। पॉडकास्ट अपनी कहानियाँ प्रस्तुत करने का नया माध्यम है। सभी बच्चें उनकी बातों से काफ़ी प्रेरित हुए ।

Compiled by Library Council Members:
Natalia Kapoor, Nyra Kapoor, Maedhaavi Mahajan, Sia Dixit, Veer Ramchandhani, Armana Dalmia, Aditya Singh Saggu, Arin Ganeshan and Nirvaan Bhatia
(Classes 3, 4 and 5)

Ms. Anita Roy

A columnist, writer, editor and environmentalist Ms. Anita Roy and her cat, Alfie, had a fascinating and enlightening session with the students of class 5. She said there is no magic which enables you to start writing books. It only depends on one thing- reading. She shared her experience and journey of becoming an author. An author is not made overnight and it's a long journey with lots of ups and downs. She advised the students not to get disheartened while writing stories as the first draft is always going to be trash. Therefore, set the bar and expectations really low when you first begin writing. It's only through hardwork that one actually gets a good book. Ms. Roy is curious about many things and hence she researches on various topics which she finally converts into books. She has written books on science fiction for young adults, non-fiction, nature and many other subjects. In the pipeline, there's a picture book for babies on 'How to Count'. She is also working on a non-fiction book on nature. She loves exploring and writing through her travel experiences. Writing is a way of exploring who you actually are and hence she believes in experimenting with different genres.

Illustrator – Mr. Ujan Dutta

On the second day of Authorscape, the students of class 3 and 4 had an engaging talk with Mr. Ujan Dutta on how illustrations are made. He spoke about what inspired him to create his art and how he made books look attractive. Mr. Dutta told them how everything around us had a design and designing makes things look and function better. He showed them how a character is designed in different ways by adding various features and colours to it. He had a discussion with the students on the three components which are required to create an illustration namely the character, the place and the idea. He showed many book covers that he had illustrated so far. His advice to the students was 'to not limit oneself'.

AUTHORSCAPE

SHASHI THAROOR

This year, we tested students on what Mr. Shashi Tharoor is most famous for- his vocabulary!

VVIQ

Farrago {Definition: A confused mixture}

"Uhh... it sounds like a sandwich of some kind." *- Siddhant Gandhi, 12*
"Oh! A fast car, like a Ferrari" *- Arav Malhotra, 12*
"Isn't that a movie?" *- Anonymous*
"Uncertainty, or something like that." *- Nandani Agarwal, 12*

Rodomontade {Definition: boastful or inflated talk or behaviour}

"It sounds like a medical test of sorts" *-Anonymous*
"A GPS that you put in a car? I don't know" *- Kushagra Goenka, 12*
"When you make a vlog about going on a road trip" *- Kavin Bhatia, 11*
"A video montage for travelling…David Dobrick" *-Anonymous*

Snollygoster {Definition: A corrupt, unprincipled person}

"Oh I know this! Oh no, I don't." *- Ayushmaan Kher, 11*
"Boogers dude…come on" *- Armaan Gandhi, 12*
"A corrupt politician or something. Please find someone less smart than I am." *- Aryaman Minocha, 12*

Puerile {Definition: Childishly silly and immature}

"The liquid thing! You know what I me-an." *- Anonymous*
"Oh it's that feeling after you throw up, right?" *- Raisah Panda, 12*
"Um...childish?" *- Laila Alva, 12*

Floccinaucinihilipilification { Definition: The act or habit of estimating something as worthless}

"Everyone knows this word, they just don't know the meaning of it" *- Laila Alva, 12*
"Do I look like Shashi Tharoor to you?" *- Jai Kapoor, 12*

SRIJAN PAL SINGH

"The world changed, because some people refused to study stars while others chose to follow them like a guiding stone"

Did you know?

- Stars have been studied for over 35,000 years!
- Stars have helped us with various things: finding food and water, navigating oceans, predicting the weather and making calendars.
- Even Christopher Columbus used the movement of planets to his advantage.
- He told the Jamaicans that if he wasn't given shelter, his God would eat the moon, their island and then their people. Since he timed this perfectly with the lunar eclipse where the earth's shadow fell on the moon, the Jamaicans got afraid and thought the moon was bleeding and being eaten. This allowed him to obtain food, water and shelter instead of dying in the turbulent Atlantic Ocean.

-Vedika Bagla, 12

ZUNI CHOPRA

Passion

With a vivacious aura and an enthusiastic smile,
Her words made us ponder for a while.
She lived our lives just a few years before,
And her achievements inspire us to aim for more.

She spoke about poetry, writing and and life at Stanford,
Juggling the unrelentless pressure (which for us was not unheard).
We peered into the other side of the lune,
One where the young writer whistles her heart's tune.

She shined light on the possibilities we have yet to explore,
Empowering our stories, telling us it's our time to soar.
She told us while our passion may drive us from Tanzania to Rome,
It will always take us back to our heart, our home.

-Shyla Upadhyay, 10

ANU SINGH

Her words were like a breath of fresh air,
They renewed our wish to stay bilingual with a flair.
क्या अंग्रेज़ी है परिष्कार की भाषा,
बिलकुल नहीं, यह सिर्फ़ हैं, एक ढोंग का ढाँचा।

Our mother tongues need revival,
They need acceptance and respect, not denial.
ज़ुबान से महोब्बत करना सीखों,
देश को साहित्य के संसार से परखो।

The erstwhile writer is no longer poor,
But is writing and living in grandeur.
द्विभाषीक होना हैं, हम सब का वरदान,
बात कर सकते है विश्वभर सहित सम्मान।

From the bottom of our grateful hearts,
We thank Ms. Anu Singh for this wonderful session.
आपके मर्गदर्शन व ज्ञान में नहीं है कोई वाद विवाद,
हम सब की तरफ़ से आपका कोटि कोटि धन्यवाद।

-Daksayani Chandra, 10

MOHINI GUPTA

अनुवाद का संगीतात्मकता; मोहित करने वाली,
हिंदी में कविता का तुक करना; लगता उन्हें अत्यंत मज़ेदार।
भाषाओं को बचाए रखना है उनका काम,
उनके बीच के पुल को बनाने की हैं वह कलाकार ।

She is also passionate about Music and Archeology,
And believes the 'White man's burden' ideology has influenced us deeply.
While spending time in Wales she learnt Welsh too,
And has now taken it upon herself to bring back our languages; translations to the rescue!

उपनिवेश से प्रभावित हो अपनी ही संस्कृति खो बैठे हैं हम,
खो बैठे हैं अब अपनी मातृभाषा के प्रति प्यार।
परदेस से हुए हैं प्रभावित तो उनकी तरह मातृभाषा भी बचा लें,
यह हैं श्रीमती मोहिनी गुप्ता के विचार।

- Advaita Sehgal, 10

GITI CHANDRA

The students of classes 7 and 8 had a very interactive session with Ms. Chandra on the 8th of September. She started by talking about how 'depressing themes' like death, violence, genocide, and war are what most readers enjoy reading, though young-adult fantasy was what she was truly passionate about.

Ms. Chandra shared her experience of 'riding the crest of a wave' as the first Indian young adult fantasy writer and the difficulties that accompanied this. She also spoke about her interest in astronomy and different mythologies, giving an example of how differently snakes are perceived in Indian culture as opposed to others, for example, 'Voldemort' in the 'Harry Potter' series!

Ms. Chandra confided that she believed that nothing was more fantastical than reality and that talking of a world where everyone practiced magic 'normalised magic' by taking away its 'wow-factor'. Her take on 'The Hunger Games' left many of us intrigued, especially when she compared the readers of the series to the 'Capitol' audience instead of the protagonists who people would usually imagine themselves as.

The talk was extremely interesting as Ms. Chandra's views provided us with a new perspective on various matters.

-Prakriti Mahajan, 12

ANITA ROY

A bright and friendly presence, Anita Roy conducted a fun and interactive session. Beginning with an introduction to Alfie, her cat, she answered various questions posed by the students while sharing important insights. She spoke of her love of reading and the magic of books which could transport a reader into a completely different world. She also explained why her books had no particular genre, saying labels serve to restrict the multifaceted individuals we all are.

She spoke frankly about the financial practicality of being an editor as opposed to a writer, and how it was an easier task. She used an apt metaphor, calling editors diamond cutters, who simply helped the message of the work shine through better. She also spoke about writing and how it could surprise even the writer! The session left everyone eager to read her books themselves.

-Kavyini Garodia, 11

JAYANTI RANGARATHAN

जिस क्षण श्रीमती जयंती रंगानाथन ने छात्रों से यह बोला कि वे उन्हें अपने मित्र के तरह 'यार' से पुकार सकते हैं और बिना डरे उनके सामने अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं, उसी क्षण उन्होंने सब का दिल जीत लिया। हिंदी भाषा की विद्यार्थियों के समक्ष घटती हुई उपलब्धता के विषय पर बात करते हुए, उन्होंने छात्रों को हिंदी को पाठ्यपुस्तक तक सीमित करने से निरुत्साहित किया और भाषा से मोहब्बत करने का बढ़ावा दिया। अपने बचपन में लिखी हुई कहानी, 'धाँसू के आंसू' के उदाहरण से उन्होंने छात्रों को कहानियों को पढ़ने व लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। सुश्री जयंती रंगानाथन ने अंत में यह कहा कि वह ' कहानियों के पात्रों द्वारा अपना जीवन जीती हैं' और अगर छात्र भी यह करें तो उनका जीवन और भी रोचक हो सकता है।

–अर्शया गौर, ११

UJAN DUTTA

"Everything requires some sort of artistry."

Over the course of the discussion, Mr. Dutta encapsulated what art meant to him and how a simple drawing could enhance a book and the overall experience of reading it. I have depicted my learnings from the discussion in the image given below

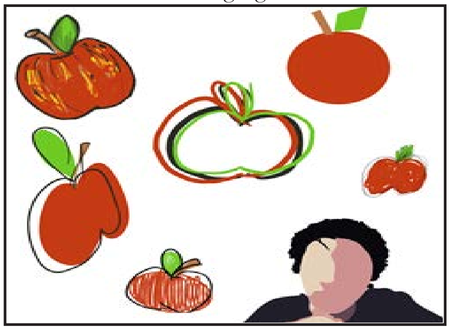

-Sara Jayakumar, 9

BHAKTI MATHUR

"As the Gods applauded Durga's victory, men on Earth rejoiced the demon's fall. Since that fateful day, Ma Durga has protected us all from evil."

Ms. Bhakti Mathur, the author of the popular 'Amma Tell Me' series of children's picture books about Indian festivals and mythology, began her session by reading passages from two of her books. She told us how though she initially began writing only for her children, she soon started publishing her books. After having given us an insight into her own writing approach and method, she revealed that books were her best friends and encouraged the students to read more often. After a fun and engaging session, she left us all with a valuable message: reading not only enriches our lives but also gives us a gift in the form of a friend for life.

-Anahita Kukreja, 11

The Importance of Health

Nearly a century ago, the influenza pandemic was regarded as the most severe pandemic in history. Now, the COVID-19 pandemic takes the prize.

One of the most prevalent negative impacts of the COVID-19 pandemic is physical inactivity. The obesity rate in our society, which was already exceedingly high, has spiked to an even more frightening level recently. Lockdown, however, is an opportunity to improve oneself, especially physically. Staying active has become essential. Exercising helps release toxins from the body and gets our blood flowing. The goal is to find workouts that meet the Three E criteria (easy, efficient, effective).

Dr. David Neiman, a renowned scholar, used to stress on the importance of engaging in exercise and adopting vegetarianism to enhance the immune system. Research shows that this helps lower cholesterol and blood pressure as well as the risk of type 2 diabetes and cancer. Shifting to a vegetarian diet also means saving tons of animals from the horrific cruelty of the meat industry and the reduction of toxic greenhouse gas emissions.

Being is the most virtuous and healthy step one can take. However, none of this is possible without motivation which can be achieved through discipline and by having positive mental headspace. A great man once said, “You’re not going to master your life in one day. Relax. Master the day. Then keep doing that every day.”

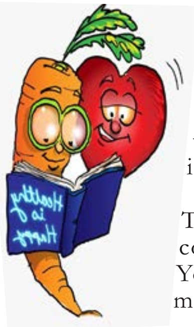

Health should be our topmost priority. We must keep in mind that adopting better lifestyle choices now will make us happier in the long run.

The first step towards achieving good health is to spread consciousness, which I hope I have done through this piece. Your one body has to take you all the way to the end. Love, but more importantly, respect it.

-Jia Bhandal, 9

WORLD TODAY

India now has the highest number of COVID recoveries in the world

Tensions between India and China are rising at the Ladakh border. Chinese incursions into Indian territory have been countered by Indian military.

Donald Trump signs new, expanded executive order to lower US drug prices.

A blitz of wildfires across Oregon, California and Washington has destroyed thousands of homes and a half dozen small towns this summer, killing more than two dozen people since early August.

An estimated 150,000 people flooded the streets of the Belarusian capital, demanding President Lukashenko’s resignation after extension of his 26-year rule.

Japan’s Yoshihide Suga, a long-time ally of outgoing Prime Minister Shinzo Abe, won a ruling Liberal Democratic Party (LDP) leadership election, paving the way for him to become Prime Minister in a parliamentary vote.

A new era for the Middle East will be charted when the UAE and Bahrain sign agreements to recognise Israel, in a move that shatters the Arab world’s consensus on the Palestinian cause.

Oxford’s vaccine trials resume in the UK, after being paused due to a volunteer falling ill.

The Bitter Truth of Bollywood

‘Beyoncé Sharma Jayegi’- the new song from Ananya Pandey-Ishaan Khatter starrer, ‘Khaali Peeli’ is making headlines for all the wrong reasons. A casually racist lyric in this song has triggered major internet backlash and resulted in around a million dislikes on YouTube. Despite the recent name change from ‘Beyoncé’ to ‘Beyonse’, in order to evade trademark infringement issues, the discriminatory lyric is not a secret subtext, but is a glaring spotlight on the rampant racism in the industry and in our nation.

“Tujhe dekh ke goriya, Beyonce sharma jayegi (which translates to “after looking at you fair woman, Beyonce will feel embarrassed”). These lyrics shine light on Bollywood’s lack of inclusion towards different races and colours. The director of ‘Khaali Peeli’, Maqbool Khan, has tried to justify these lines by stating that the word “goriya” has not been used literally, refering to its inclusion in centuries of Bollywood music. These lyrics remain irrefutably incorrect and unjustifiable. In fact, Mr Khan’s statement just delineates the sad truth of normalisation of colourist discrimination in the film industry. India’s beauty standards have always been confined to one thing- skin colour. Be it the popular ‘Fair and Lovely’ creams or such racist lyrics, generations have had it drilled into their heads that being dark-skinned is a curse.

One of the most successful pop musicians in the world should not “Sharma” in front of a “goriya” just because of her skin colour. India should not propagate such racism in media and entertainment that we, as citizens, eat, sleep and breathe. Beyoncé Sharma Jayegi? Absolutely not.

-Tvisha Jerath and Sumaya Beri, 9

The “Forgotten” People

Recently, scrolling through my social media accounts, I have noticed that the posts on the Uyghur Muslims who are being held in detention centers in China have stopped. However, these people are still there, and they are still suffering.

Everywhere I look, I see people wanting to sign petitions and express their views through social media. Everyone wants countries to take action against China but what they must understand is that China is a massive sovereign nation that supplies countries with pretty much all electronics. Going against China would push any nation out of the electronic age and into a previous era of technology.

Even if countries cannot take measures against China, we can. Since the money to make these detention centers comes from their exports, we can boycott their goods. The Uyghur Muslim issue is not just a “trend”. These people need our help. Petitions are not enough, it’s time we take action and actively stop using Chinese goods.

-Jehan Bhandal, 10

EDITORIAL BOARD

Anivartin Daga, Anirudh Vats, Sumaya Beri, Sara Jayakumar, Tvisha Jerath, Advaita Sehgal, Siddhant Nagrath, Shyla Upadhyay, Daksayani Chandra, Jehan Vir Singh Bhandal, Katyayani Jha, Tara Jing Gopinath, Arshya Gaur, Anahita Kukreja, Kavyini Garodia, Prakriti Mahajan, Prithvi Oak, Sanaa Sharma, Vedika Bagla

Editor - Reana Soni